विश्व आर्थिक युद्ध

और

स्वदेशी ब्रह्मास्त्र

विश्व आर्थिक युद्ध और स्वदेशी ब्रह्मास्त्र

लेखक : **श्री कश्मीरी लाल**
अखिल भारतीय संगठक, स्वदेशी जागरण मंच

मूल्य
20/-

प्रकाशक
स्वदेशी जागरण प्रकाशन
'धर्मक्षेत्र', बाबू गेनू मार्ग,
सेक्टर–8, आर.के. पुरम्, नई दिल्ली–110022
Website: www.swadeshionline.in, www.joinswadeshi.com
Email: swadeshipatrika@rediffmail.com, editor.swadeshionline@gmail.com

विश्व आर्थिक युद्ध
और
स्वदेशी ब्रह्मास्त्र

श्री कश्मीरी लाल

प्रस्तावना

पूरा विश्व इस समय अमरीका और चीन प्रणीत विश्व व्यापार युद्ध या कहिए आर्थिक युद्ध से त्रस्त है। जहां अनेक वर्षों से चीन ने अपनी वस्तुओं को गोपनीय तरीके से सस्ता कर भारत सहित विश्व भर में डंपिंग की है और भारत के बाज़ार तथा रोज़गार को बेहद नुकसान पहुंचा रखा है, तो दूसरी तरफ अमरीका के नए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आकर भारत सहित सारे विश्व के देशों पर नए–नए टैरिफ लगाए है और उन्हें मजबूर कर रहा है कि वे अमरीकी कंपनियों तथा उनके उत्पादों को अपने बाजारों में जीरो टैरिफ लगाते हुए घुसने (लूटने) की खुली छूट दे।

केवल इतना ही नहीं, अभी–अभी जिस पाकिस्तान ने पहलगाम में आतंकी भेजे, जिसे हमारी सेनाओं ने ऑपरेशन सिंदूर करके चार दिन में ही सीजफायर के लिए मजबूर किया, उसी पाकिस्तान को सरेआम चीन और तुर्कीय ने न केवल राजनयिक समर्थन दिया, बल्कि खुलेआम लड़ाकू विमान, ड्रोन और अन्य हथियार दिए। अन्य वैश्विक मंचों पर भी वे पाकिस्तान को बचाने में लगे रहते हैं। यहां तक कि यूनाइटेड नेशन की सुरक्षा परिषद में हर बार वही चीन आतंकवादियों को घोषित करने से बचा लेता है और हम उसी चीन से हर वर्ष 105 अरब डॉलर से अधिक का सामान आयात करते हैं। अर्थात् हम ऐसे विचित्र कार्य (व्यापार) कर रहे हैं जो हमारे ही दुश्मनों को हथियार और कूटनीतिक समर्थन देने में लगे हैं। हमें तुरंत इस विषय में चेतना होगा।

फिर अमरीका आदि देश, जो अपने को भारत का मित्र देश भी कहते हैं, वे भी कोई भारत समर्थक भूमिका नहीं निभा रहे, बल्कि कहीं न कहीं वे भी पाकिस्तान का अप्रत्यक्ष समर्थन कर भारत पर ही दबाव बनाने में लगे हैं, क्योंकि भारत के उभरने से उनकी कंपनियों को कंपीटीशन मिलने की आशंका है और उन्हें लगता है कि वे तभी भारत को लूट सकते हैं यदि भारत दबाव में रहे, और उनका पिछलग्गू देश बना रहे। चीन, अमरीका और यूरोप आदि देश न केवल बेहद स्वार्थी रवैया अपनाए हैं बल्कि भारत के विशाल बाज़ार पर उनकी लालची नजरें भी गड़ी

हुई हैं। ऐसे में भारत को आर्थिक और सामरिक और कूटनीतिक स्तर पर सुरक्षित निकलने और इस विश्व व्यापार युद्ध में विजय प्राप्त करने वाली रणनीति पर गंभीरता से विचार करना होगा।

इस उत्तम, सटीक रणनीति और आर्थिक ब्रह्मास्त्र का नाम ही है – स्वदेशी और स्वावलंबन। 'स्वदेशी स्वीकार–विदेशी का करो बहिष्कार' यह प्रस्तुत पुस्तिका में इसी विषय की विस्तार से चर्चा होगी। यद्यपि प्राचीन पर नित नूतन मंत्र ही इस आर्थिक युद्ध में भारत का विजयी हथियार होगा।

❑❑❑

विश्व आर्थिक युद्ध और स्वदेशी ब्रह्मास्त्र

आतंक पर भारत का कठोर उत्तर

गत 22 अप्रैल 2025 को भारत के जम्मू–कश्मीर के एक पर्यटन स्थल 'पहलगाम' में पाकिस्तानी आतंकवादियों ने हमला करके 26 निर्दोष पर्यटकों को मार डाला। यह आतंकवाद का वीभत्स रूप था। जहां पर पत्नियों के सामने पतियों को, मां के सामने बेटे को मार डाला गया। धर्म पूछ–पूछकर उसके अनुसार हत्याएं की गई। जो गर्मियों में कश्मीर की वादियों में घूमने के लिए आए थे, उनको जीवन का सबसे दर्दनाक हादसा दिया।

सारा भारत ही नहीं, पूरा विश्व इस आतंकी घटना से हिल उठा। इससे पहले भी आतंकवादी वहां से आते थे, किंतु उड़ी या पुलवामा में उन्होंने सुरक्षा बलों पर हमला किया था। इस बार वह भारत की अर्थव्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए और हिंदू–मुस्लिम का विवाद खड़ा करने के लिए इस प्रकार की घिनौनी हरकत पर उतर आए।

पाकिस्तान की सेना के प्रमुख मुनीर रजा ने थोड़े दिन ही पहले द्वि–राष्ट्र सिद्धांत की थ्यौरी पर बोला था। यानि इन आतंकवादियों को जो धर्म पूछ–पूछकर मार रहे थे, उनकी मानसिकता का, उनके दिमाग में क्या भरा था, इसका अहसास पाकिस्तान के सेना प्रमुख के भाषण में स्पष्ट था। इस सारी घटना पर पाकिस्तान से लेकर उसके समर्थक चीन और तुरकिये आदि देशों ने कोई शोक संवेदना व्यक्त नहीं की, बल्कि गोलमोल ढंग से इसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए, ऐसा कहकर विषय को ओर उलझाया।

भारत का कठोर उत्तर

स्वाभाविक था कि भारत को इसका करारा उत्तर देना ही था। भारत ने तुरंत, जो थोड़ा बहुत आयात–निर्यात पाकिस्तान से होता था, उसको पूरी तरह से प्रतिबंधित किया। तीसरे देश से होकर जाने वाले सामान को भी रोकने के लिए आदेश पारित किया और उनके राजनायिक स्तर को कम किया तथा सबसे बड़ा

विषय सिंधु जल समझौता, जो 1964–65 में हुआ था, उसको निरस्त कर दिया। इस सारे कारणों से पाकिस्तान बिलबिला उठा। पाकिस्तान पहले से ही आर्थिक मोर्चे पर बुरी तरह से घिरा हुआ है, ऊपर से यह नए प्रतिबंध और पानी का रोकना। वह दुनिया भर में शोर मचाने लगा और फिर विश्व बैंक एवं आईएमएफ से मिलने वाले लोन के लिए जब वह प्रयास करने लगा तो भारत ने वहां पर भी रोकने का प्रयत्न किया।

अति सफल 'ऑपरेशन सिंदूर

'ऑपरेशन सिंदूर' यह 7 मई 2025 की रात्रि को शुरू हुआ। पहले ही रात्रि में पाकिस्तान के भीतर जो बड़े आतंकवादियों के ठिकानों, प्रशिक्षण केंद्रों पर मिसाइल और जहाज से हमले किए गए, वो सब निशाने इतने सटीक बैठे कि जिसकी विश्व भर में चर्चा हुई। प्रमुख रूप से लश्करे तैयबा और जैशे मोहम्मद जैसे संगठनों से संबंधित यह ठिकाने, पाक अधिकृत कश्मीर से लेकर 260 किलोमीटर पाकिस्तान के अंदर तक स्थित थे। आतंकवादी ठिकानों के ध्वस्त होने से लगभग 100 आतंकवादी मारे गए। जिनमें यूनाइटेड नेशन द्वारा घोषित एक आतंकी भी था। जिसको बाद में दफनाने के लिए वहां की सेना के जनरल, सांसद व मिनिस्टर तक उपस्थित थे। जो कि यह स्पष्ट बता रहा था कि वहां आतंकवादियों को किस बड़े स्तर तक, से सीधे समर्थन मिलता है। अब पाकिस्तान जो स्वयं आतंकवाद प्रायोजित करता था, उसको भारत की इस बड़ी कार्रवाई का कुछ उत्तर देना तो उसकी मज़बूरी भी थी। किंतु यह दूसरी, उसकी बड़ी गलती भी थी।

जैसे ही उसने भारत के अंदर हमले शुरू किये, भारत से सघन प्रतिकार हुआ। ब्रह्मोस मिसाइल, अग्नि तीर आदि लगातार छोड़े गए। जिससे लाहौर का बड़ा रडार सिस्टम ध्वस्त हो गया। रावलपिंडी का बड़ा हवाई अड्डा नूर फतेह ध्वस्त हो गया। इसके अलावा भी उसके पांच बड़े एयरपोर्ट को बुरी तरह नुकसान पहुंचा।

आनन–फानन में पाकिस्तान द्वारा गिराई गई भारत के ऊपर मिसाइल किसी भी बड़े ठिकाने पर नहीं गिरी। यहां तक कि उनकी एक चीनी मिसाइल तो होशियारपुर के पास गिरी, जो चली तक नहीं। इससे दो बातें सिद्ध हुई। एक चीन सीधे अपने हथियारों से पाकिस्तान का युद्ध लड़ रहा था और दूसरा उनके हथियार ऐसे हैं जो चलते तक भी नहीं। तुर्की ने, जिसके पास बहुत अच्छे स्तर के ड्रोन हैं व बड़ी मात्रा में पाकिस्तान को सप्लाई किए थे, उसका उपयोग भी किया। किंतु भारत की सेना ने सफल प्रतिकार करके अधिकांश वे ड्रोन मार

गिराए। कुल मिलाकर इस सारे में पांच भारत के जवान शहीद हुए और 16 पाकिस्तान के मारे गए। चार दिन तक यह युद्ध चलने के बाद पाकिस्तान के डीजीएमओ ने भारत के सैन्य अधिकारी डीजीएमओ को फोन किया कि हम लड़ाई रोकने को तैयार हैं, सीजफायर करने को तैयार हैं, भारत ने भी उसका सकारात्मक उत्तर दिया। क्योंकि भारत तो पहले ही नहीं चाहता था कि इस लड़ाई को लंबा किया जाए। भारत तो केवल आतंकवादियों के ठिकानों को ध्वस्त करने में ही रुचि ले रहा था।

नई रणनीति अपनानी होगी

भारत विजयी होकर उभरा। किंतु इस 4 दिन के युद्ध से एक बार स्पष्ट हो गई कि चीन, तुरकिये और अजरबेजान खुलेतौर पर हथियार देकर पाकिस्तान की और से आतंकवाद का संरक्षण और सहयोग कर रहे थे। लेकिन इससे भी निराशाजनक बात यूरोप, अमरीकी और अन्य भारतीय मित्र देशों की है, जिन्होंने आतंकवाद की घटना की निंदा तो की, किंतु पाकिस्तान को करारा जवाब देना चाहिए, ऐसा खुलकर समर्थन भी उन्होंने नहीं किया। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि विश्व के अधिकांश देश अपने आपको जज बनाकर रखना और उपदेश देना कि "लड़ाई न करो" इसमें अपनी इमेज को उभरता ज्यादा देखते हैं। आतंकवाद के विरुद्ध एक गंभीर लड़ाई लड़ते भारत के समर्थन करने से अधिक वे अपने आपको उपदेशक व जज की भूमिका में रखना ज्यादा पसंद करते हैं। ऐसे में भारत को अपनी आगामी वैश्विक रणनीति, वैश्विक राजनीति और वैश्विक आर्थिक नीति इसको इस परिपेक्षय में बदलना होगा।

विश्व आर्थिक युद्ध

विश्व आर्थिक युद्ध एक तरफ चीन पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवादी युद्ध और प्रत्यक्ष सैन्य युद्ध तथा दूसरी तरफ चीन और अमरीका द्वारा प्रारंभ किया गया, काफी समय से विश्व व्यापार युद्ध या कहिए विश्व आर्थिक युद्ध। जब से अमरीका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बनकर आए हैं, उन्होंने लगातार अमरीका की कमजोर आर्थिक स्थिति देखते हुए विश्व भर के ऊपर अनेक प्रकार के आर्थिक प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। जिनमें सबसे प्रमुख है, उनका टैरिफ वार। उन्होंने अपने मित्र देश कनाडा, मेक्सिको और यूरोपीय यूनियन से लेकर चीन, पाकिस्तान तक बड़े–बड़े टैरिफ लगाए हैं।

अमरीका ने प्रारंभ किया टैरिफ वार

आमतौर पर यह टैरिफ 10 प्रतिशत से लेकर चीन पर 145 प्रतिशत तक अधिकतम लगाए हैं। इस सारे से विश्व भर की आर्थिक प्रक्रिया गड़बड़ा गई है। उन्होंने अन्य प्रकार के भी इंपोर्ट प्रतिबंध लगाए हैं और खुलेआम इसे वे टैरिफ वार या वर्ल्ड ट्रेड वार घोषित कर रहे हैं। पिछली बार डोनाल्ड ट्रंप ने स्पष्ट बोला था कि यह ट्रेड वार, मिलिट्री वार के मुकाबले अमरीका के हित में अधिक है। इससे सारे विश्व की सप्लाई चेन, व्यापार के तरीकों पर असर पड़ रहा है। उन्होंने 25 प्रतिशत स्टील आयात पर सारे विश्व में ही प्रतिबंध लगा दिया है। और अमेरिका क्योंकि 30 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी है और उसका 2.6 ट्रिलियन डॉलर का व्यापार है, इसलिए वह सारी दुनिया को छोटा समझकर सबके खिलाफ एकतरफा घोषणाएं कर रहा है। यद्यपि इसका नकारात्मक असर चारों तरफ पड़ रहा है। उदाहरण के तौर पर पिछली तिमाही में ही अमरीका की जीडीपी 0.3 प्रतिशत नकारात्मक रही है और यदि अगली तिमाही में भी ऐसा हुआ, जिसकी संभावना काफी है, तो अमरीका घोषित रूप से रिसेशन में चला जाएगा। किंतु अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सिर पर अहंकार और स्वार्थ पूरी तरह से छाया हुआ है।

चीन के आर्थिक युद्ध का अलग तरीका

चीन तो गत लगभग 20–22 वर्षों से ही सारे विश्व में अपने व्यापार और निर्यात के कारण से राज करने की कोशिश कर रहा है, क्योंकि चीन के अंदर कम्युनिस्ट शासन है, वास्तव में वहां एक पार्टी शासन है। शी जिनपिंग वहां के लगातार 20 वर्षों से निर्विवाद एकतरफा राष्ट्रपति बने हुए हैं, इसलिए चीन ने सब प्रकार के नियम, कानून, कायदे तोड़ते हुए, पर्यावरण का पोषण करते हुए, लेबर लाज़ की परवाह न करते हुए यानि मजदूरों के किसानों के हितों को कुचलते हुए, इस बात को सुनिश्चित किया कि वह दुनिया में सबसे सस्ती चीजों का निर्माण करें और इसमें उसने बड़ी मात्रा में सफलता भी पाई तथा सारे विश्व में वहां की जो भी कीमत, जिस चीज की कीमत हो, उससे कम दाम पर उसने वहां पहुंचाना शुरू कर दिया। इसे ही डंपिंग कहते हैं और वह बड़ी मात्रा में भारत समेत सारे विश्व में ऐसा करता है। चीन इसके कारण से विश्व का सबसे अधिक निर्यातक देश बन गया है। लगभग 3 ट्रिलियन डॉलर के उसके निर्यात हैं। उसमें से 500 अरब डॉलर वह प्रतिवर्ष कमाता है। भारत से भी वह प्रतिवर्ष लगभग 98 अरब

डॉलर कमाता है। इसके कारण से वह भारतीय बाजार और भारतीय रोजगार को पंगु बनाने में सफल हुआ है और क्योंकि पूर्व की सरकारों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और समाज में भी इस पर बहुत बड़ी जागृति नहीं थी, इसलिए चीन भारत के बाजार और रोजगार पर बड़ी मार करने में सफल हुआ है, जिसका निराकरण करने के लिए अब व्यापक प्रयत्न करने होंगे।

युद्धों का बदलता स्वरूप

इस समय अमेरिका, चीन या अन्य देश जो विश्व व्यापार युद्ध लड़ रहे हैं, भारत अभी उसमें उतरा तो है, पर सफलता नहीं मिली है। क्योंकि यह नया स्वरूप है, जिसका प्रमुख रूप से आविष्कारक चीन और अमेरिका एवं कुछ पश्चिमी यूरोपीय देश ही हैं। 15वीं–16वीं शताब्दी में तो युद्ध तीर तलवारों से लड़े जाते थे बड़ी–बड़ी सेनायें रहती थी, युद्ध के मैदान सजते थे और एक–दो दिन में ही सारे युद्ध निपट जाते थे। 17वीं–18वीं शताब्दी में तीर–तलवार का स्थान बंदूक–तोप व अन्य बारूदी हथियारों ने ले लिया। दूर से ही दुश्मन को मारना, यद्यपि आमने–सामने आते थे, इसमें बड़ी मात्रा में जन–धन की हानि होती थी किंतु यह स्वरूप भी लगातार चला है।

19वीं–20वीं शताब्दी में अधिक खतरनाक हथियार आ गए, हवाई जहाज आ गए, लंबी दूरी से मार करने वाले शस्त्र आ गए, यहां तक कि सर्वनाश करने वाले एटॉमिक और हाइड्रोजन बम जैसे हथियार भी आ गए। द्वितीय विश्व युद्ध में जिसका प्रयोग अमरीका ने ही पहली और अंतिम बार जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर किया। वहां लाखों लोग एक साथ मारे गए और लाखों आगे पीढ़ियों तक अपंग या अल्पविकसित हो गए। किंतु इसके पश्चात कोई विश्व आणविक युद्ध नहीं हुआ, होने की संभावना भी कम है क्योंकि यह सबने जान लिया है कि आणविक हथियार से कोई भी देश विजयी नहीं हो सकता और अभी के युद्ध में तो लंबी दूरी की मिसाइल, ड्रोन, रोबोट, स्टार वार इसकी चर्चा है, किंतु इन सबसे भी अधिक मुखर होकर एवं अधिक प्रभावी ढंग से विश्व आर्थिक युद्ध या कहिए कि विश्व व्यापार युद्ध, होने शुरू हुए हैं। इसके भी पहले प्रणेता तो अमरीका व यूरोप ही है। जबकि चीन और उसके कुछ सहयोगी देश इसमें आगे निकलते दिखाई देते हैं।

अमरीका, यूरोप ने बनाए बड़े आर्थिक संस्थान

वास्तव में द्वितीय विश्व युद्ध के समय से ही अमरीका ने विश्व आर्थिक युद्ध प्रारंभ करते हुए विश्व स्तरीय आर्थिक संस्थान बनाएं। उसने अपने सहयोगियों के साथ विश्व बैंक बनाया, इंटरनेशनल मोनेटरी फंड बनाया, यूनाइटेड नेशन बनाया, जिसका मुख्य उद्देश्य था – अमरीकी आर्थिक व सामरिक हितों की रक्षा करना। 1990–95 आते–आते तक उन्होंने विश्व के अनेक देशों को अपने कर्ज जाल में फंसा लिया। वहां पर अपनी कंपनियां भेजकर अरबों डॉलर कमाने शुरू कर दिए।

इसी क्रम में ही उन्होंने एक बड़ा परिवर्तन करते हुए 1995 में गैट वार्ता, डंकल वार्ता और अंत में विश्व व्यापार संघ (डब्ल्यूटीओ) का निर्माण किया। ताकि विश्व भर में वे अपनी कंपनियों को भेज सकें, वहां पर टैरिफ कम लगें और उन्हें अपना माल बेचने में सुविधा हो। धीरे–धीरे करके चीन इसमें काफी आगे बढ़ गया। इधर भारत भी काफी तेजी से आगे निकलने लगा। साउथ ईस्ट एशिया के अनेक देश जैसे इंडोनेशिया, वियतनाम, बांग्लादेश इनके अंदर भी निर्माण और निर्यात शुरू हुआ और अब इन गौरे मुल्कों को लगने लगा कि वह इस तरीके से अब अधिक पैसा नहीं कमा पाएंगे, तो अब उन्होंने उसके स्थान पर विशेषकर अमरीका ने टैरिफ वार छेड़ दिया। वह डब्ल्यूटीओ और फ्री ट्रेड का सबसे बड़ा प्रबल प्रवक्ता था कि सारे देशों को अपने–अपने टैरिफ कम करने चाहिए, किंतु अब वह ही सबसे अधिक टैरिफ लगाने लगा है। अमरीका फर्स्ट, यही उसका नारा है। बाकी सारी दुनिया कहां जाती है, इससे उनका मतलब नहीं और डोनाल्ड ट्रंप तो टैरिफ लगाते हुए नग्न रूप से स्वार्थी होने की घोषणा कर रहे हैं कि दूसरे किसी भी देश में अगर अमरीकी कंपनी अपना कारखाना, फैक्टरी लगाएगी, तो उसके ऊपर 25 प्रतिशत तक के टैरिफ लगाएंगे। एप्पल के मामले में ऐसा ही उन्होंने किया, जब उन्होंने कहा कि भारत में बनने पर आप पर 25 प्रतिशत टैरिफ (अमरीकी कंपनी पर भी) लग जाएगा। यह सर्वथा डब्ल्यूटीओ के नियमों के खिलाफ है जो कि अमरीका और उसके सहयोगी दलों/देशों ने ही बनाए थे।

विश्व व्यापार युद्ध के बीच भारत की स्थिति

भारत को अब इस अमरीका और चीन प्रणीत विश्व व्यापार युद्ध में कुशलता से उतरना होगा। भारत अब 1990–95 जैसी दीन–हीन हालत में नहीं है, बल्कि वह 4.2 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था

बन गया है। आज भारत का निर्यात 450 अरब डॉलर पार कर गया है, जबकि उसकी सेवाओं का निर्यात तो 300 अरब डालर तक का भी है। भारत का सेवा और वस्तुओं का कुल निर्यात मिलकर लगभग 750 अरब डालर प्रति वर्ष का रहता है, यानि भारत विश्व व्यापार का एक बड़ा केंद्र तथा एक बड़ा खिलाड़ी बनकर उभरा है। भारत को अब इस विश्व आर्थिक युद्ध में विजयी होना ही होगा। उसको अपनी रणनीति वैसी बनानी होगी, इसी रणनीति का ही एक बड़ा हथियार रहेगा – **स्वदेशी और स्वावलंबन का उद्घोष,** जिसकी आगे चर्चा होगी।

विश्व व्यापार युद्ध के पांच बड़े खिलाड़ी

30 ट्रिलियन डॉलर के साथ अमरीका इस विश्व व्यापार युद्ध का अगवा देश है। इसके बाद लगभग 23.5 ट्रिलियन डॉलर (इंग्लैंड सहित) के साथ यूरोपीय यूनियन है, तीसरे स्थान पर चीन, जो लगभग 19 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन गया है। वहीं भारत 4.2 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ और विश्व के सबसे अधिक जनसंख्या वाले के देश के साथ चौथे स्थान पर है, पांचवे स्थान पर जापान है। छठे स्थान पर मिडिल ईस्ट के सब देश मिलकर सऊदी अरब, कतर आदि यह छठे बड़े खिलाड़ी हैं, जिनकी कुल जीडीपी लगभग 4 ट्रिलियन डॉलर की होगी।

इसके अलावा अन्य बड़े देशों में ब्राज़ील, कनाडा, मेक्सिको, दक्षिण अफ्रीका, रूस, इंडोनेशिया, वियतनाम आदि दक्षिण पूर्व के देश भी अच्छी अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन कर रहे हैं। सबसे पीछे रहने वालों में पाकिस्तान होगा जिसकी जीडीपी 352 अरब डॉलर की है, जो कि भारत के प्रांत महाराष्ट्र और तमिलनाडु से भी कम है। जो भी हो अमेरिका की ताकत उसका सर्विस क्षेत्र है, जो कि 75 प्रतिशत से अधिक का योगदान उसकी जीडीपी में करता है। उसके कुल जीडीपी 30 ट्रिलियन में 9 ट्रिलियन की कमाई उसके आईपीआर (इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट) से आती है।

अमरीका की कमाई, उसकी अपनी नहीं!

विश्व भर से अनुसंधानकर्ता अमरीका पहुंचते हैं। अमरीका मूलतः अपने लोगों के दिमाग व दौलत से नहीं, बल्कि वह विश्व के लोग, जो अंग्रेजी मानसिकता के होते हैं, वहां पर पहुंचकर उनके लिए रिसर्च करते हैं, उनकी कंपनियां चलाते हैं, उसी से ही अमेरिका बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। चीन की सबसे बड़ी विशेषता

उसकी मैन्युफैक्चरिंग है। वह विश्व का 28 प्रतिशत मैन्युफैक्चरिंग केंद्र है और किसी भी देश में बनने वाली उसकी चीज से सस्ती चीज बनाकर पहुंचाने में माहिर है। वह नियम, तौर तरीकों पर जोर नहीं देता। पर्यावरण से लेकर उसे देश में गलत तौर व चोरी के तरीकों से भी बड़ी मात्रा में माल भेजने में उसने सफलता हासिल की है। दुनिया में किसी भी तरह अपना माल बेचो, बस यही उसकी घोषित और अघोषित नीति है।

यूरोपीय यूनियन, जो तीसरे बड़े खिलाड़ी हैं, लगभग इंग्लैंड सहित उनकी 23 ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी है। वह अन्वेषण करती है, महंगी व बड़ी चीज बनाने के कुशल हैं, हवाई जहाज, बड़ी कारें, इलेक्ट्रॉनिक्स का सामान, रोबोटिक्स, अन्वेषण, इन सब में यूरोपियन देश काफी आगे हैं।

भारत बनेगा आर्थिक महाशक्ति

भारत के पास विविधता एक बड़ा क्षेत्र है। गत 15–20 वर्षों में कृषि निर्यात से लेकर आईटी और सॉफ्टवेयर के निर्यात तक में उसने कुशलता हासिल की है। टेक्सटाइल, हैंडीक्राफ्ट, लेदर का सामान से लेकर कार और मोबाइल के निर्माण तक में भारत विश्व में तीसरे–चौथे स्थान पर है। कंप्यूटर चिप्स सेमीकंडक्टर भी तेजी से भारत में बनने लगे हैं। एआई में भी भारत विश्व में चौथे क्रमांक पर है। इसरो के अंतरिक्ष में उड़ान हो या फिर अमूल डेरी का दूध निर्यात, भारत मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में इस समय पर आगे बढ़ रहा है। सभी बड़े शोध केद्रों ने यही घोषित किया है कि भारत अगले 2 वर्षों में ही जर्मनी को पार करके पांच ट्रिलियन डॉलर के साथ विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा और 2033 तक ही भारत 10 ट्रिलियन डॉलर तथा 2047 में 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

सबकी अपनी–अपनी ताकत

इसके अतिरिक्त जापान एक बड़ा देश है, जो अपनी घटती आबादी से परेशान है। ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, इंडोनेशिया, वियतनाम भी अपने–अपने तरीके से निर्माण व विश्व व्यापार में आगे बढ़ाने को प्रयत्नरत हैं। मिडिल ईस्ट देश की तो आय का प्रमुख साधन उनका तेल और वैश्विक कंपनियों में उनके द्वारा लगाया गया धन और उससे होने वाली उनकी आय, यही सबसे प्रमुख है। कुल मिलाकर विश्व के यह आर्थिक बड़े खिलाड़ी हैं। भारत में क्योंकि राजनीतिक स्थिरता है,

विश्व की सबसे बड़ी युवा जनसंख्या है और उसमें विश्व का सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की महत्वाकांक्षा भी है, इसलिए भारत इस समय पर विश्व आर्थिक व राजनीतिक चर्चा का केंद्र बिंदु भी बना हुआ है।

चीन और अमरीका की खतरनाक आर्थिक नीतियांः भारत का विरोधाभासी व्यवहार

जैसा कि पहले भी आया है कि चीन डंपिंग करके भारत में प्रतिवर्ष 104–105 अरब डॉलर का माल तो कानूनी तरीके से ही भेज देता है, जो गैरकानूनी तरीके से आता है वह अलग। भारत का चीन को निर्यात तो केवल 11–12 अरब डॉलर का ही है, इसके कारण से गत वर्ष ही हमारे को 99 अरब डॉलर का व्यापार घाटा हुआ है। सामान्य बच्चों के खिलौने, मूर्तियों से लेकर बड़ी टरबाइन तक, रेयर अर्थ मेटल से लेकर बिजली की झालर तक, सब वहां से आती हैं और क्योंकि वह थोड़ी सस्ती होती हैं इसलिए भारतीय लोग बिना ज्ञान के खरीद लेते हैं और अनजाने में ही अपने दुश्मन देश को उनके भयानक हथियारों के लिए, उनके आतंकवाद को समर्थन के लिए, अरबों डॉलर और रुपए प्रतिवर्ष यहां से भेजते रहते हैं। यह शायद ही विश्व में किसी देश का इतना विचित्र विरोधाभास होगा।

इसी तरह अमरीका, जिससे हमारा सबसे अधिक व्यापार है, कुल 131 अरब डॉलर का और उसमें से हमारे को लगभग 42 अरब डालर का लाभ रहता है। क्योंकि भारत ने गत वर्ष 86 अरब डॉलर का सामान अमरीका को निर्यात किया और वहां से 45 अरब डॉलर का आयात किया, इसके कारण से 41.5 अरब डॉलर भारत को बचे। किंतु अमेरिका अब उन्हीं सब सामानों पर ही 10 प्रतिशत से लेकर 26 प्रतिशत तक के टैरिफ लगा रहा है। इससे भारत के निर्यात पर बुरा असर होगा। लाभ पर भी बुरा असर पड़ने की बड़ी आशंका बनी है। इतना ही नहीं, अमेरिका तो एक कानून भी लाया है कि जो भारतीय वहां से अपने घरों पर पैसा भेजते हैं उस पर भी अतिरिक्त टैक्स लगेगा। इसके अलावा जो भारतीय वहां पर पढ़ने के लिए जाते थे और वहां से कुछ कमाई भी करते थे, उनके कमाने पर भी रोक लगा दी है। ऐसे अनेक तरीके अमरीका अपना रहा है, जिससे भारत को आर्थिक नुकसान हो। अमरीका भी भारत के अंदर तक घुसा हुआ है। पेप्सी, कोका–कोला से लेकर गूगल, यूटुयूब आदि तक यानी मैन्युफैक्चरिंग से सर्विस सेक्टर तक, हम अमरीकी उत्पादों के आदी हो गए हैं और अप्रत्यक्ष रूप से सेवा

के क्षेत्र के रूप से, डिजिटल क्षेत्र से अरबों डॉलर यह हम अमेरिका को भी भेज रहे हैं यह भी उतना ही बड़ा विरोधाभास भारत का है।

भारत की अपनी स्थिति

भारत इस समय पर 4.2 अरब डॉलर के साथ चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है। हमारा विश्व के 160 देशों से व्यापार होता है। गत वर्ष सेवा और माल का निर्यात 825 अरब डॉलर का था, जबकि आयात 919 अरब डॉलर के रहे। अंतोत्गतवा भारत को 94 अरब डॉलर का घाटा रहा, यद्यपि इसमें कमाई का बड़ा स्रोत सर्विस सेक्टर है, जिसमें हम कमाते हैं। वस्तुओं के आयात निर्यात में तो हम 280 अरब डॉलर का प्रतिवर्ष घाटा ही खाते हैं।

यह अलग बात है कि विश्व भर में गए हुए भारतीय लोग 120 अरब डॉलर अपने घरों में रेमिटेंस के नाते से भेजते हैं। जिसके कारण से हमारा मुद्रा भंडार कुछ मात्रा में ठीक बना रहता है। रुपए पर दबाव कम पड़ता है अन्यथा लगातार घाटा खाती हुई भारतीय अर्थव्यवस्था में रुपया अब तक लुढ़क कर प्रति डॉलर 100 से ऊपर हो गया होता इससे महंगाई भी बढ़ती है, रुपया कमजोर होता है और सबसे बड़ी बात है रोजगार के साधन पर्याप्त नहीं निकलते। नौकरियां बहुत कम निकलती हैं। भारत को अपनी क्षमता को पहचानना होगा।

भारत विश्व का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाजार

भारत के पास 37 करोड़ युवाओं का बल है। 145 करोड़ आबादी का विश्व का सबसे बड़ा बाजार है। उसमें भी 60 करोड लोग मध्यम आयु वर्ग में हैं, जिनके खरीद करने की अच्छी क्षमता होती है। अंग्रेजी में इसे परचेसिंग क्षमता कहते हैं। अगर भारत यह तय कर ले कि हम स्वदेशी और स्वावलंबन के मार्ग का ही अवलंबन करेंगे तो भारत अपने आप में एक छोटा विश्व है हमारे पास विश्व का सबसे बड़ा बाजार है वास्तव में इसी पर ही अमरीका, यूरोप, चीन और मिडिल ईस्ट की नजरें गढ़ी हुई है।

बाजार की रक्षा करना दायित्व भी, आवश्यक भी

अपने बाजार की सुरक्षा करना, यह आवश्यकता भी है, कर्तव्य तो है ही। वर्तमान के युद्ध हथियारों से नहीं लड़े जाने वाले। हमने इस बार के चार दिन के चले हुए पाकिस्तान के साथ युद्ध को भी देखा होगा ना, हमारे जहाज उनके देश

में गए ना, उनके हमारे देश में आए, दोनों ही अपने–अपने देश की सीमा में उड़ते रहे, कोई सैनिक भी एक दूसरे की सीमा में नहीं गया और चार दिन तक युद्ध चला, लंबा भी चल सकता था। किंतु दोनों पक्षों को नुकसान ही होता है। इसलिए भविष्य के युद्ध आर्थिक ही लड़े जाएंगे। अपने बाजार और अपने रोजगार को बचाने की लड़ाई हर एक देश को लड़नी होगी भारत को! विशेष तौर पर भारत के पास इस आर्थिक युद्ध में लड़ने का एक लंबा और बड़ा अनुभव है।

ई–कॉमर्स और क्विक कॉमर्सः नई टैक्नोलोजी विदेशी हथियार

विदेशी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने टैक्नोलोजी को नये हथियार के नाते से ई–कॉमर्स व क्विक कॉमर्स का प्रयोग किया है। अमेजॉन, वालमार्ट/फ्लिपकार्ट कंपनियों ने भारत के रिटेल सेक्टर पर बड़ी मार मारी है। टैक्नोलोजी का विरोध नहीं है, पर ये कंपनियां भारत में बिजनेस टू कस्टूमर (बीटीसी) कर ही नहीं सकती। किंतु छडल्ले से गैर कानूनी तरीके से कर रही है। इनके कैश बर्निंग मॉडल से यह भूल से भी सस्ते में बेचकर सामान्य दुकानदारों का बाजार खींच रही हैं। दोनों विदेशी कंपनियों के विरूद्ध सरकार भी बोल चुकी है, पर यह कोर्ट में बड़े वकील खड़े कर कोई नुक्ता निकाल बच जाती है। यही कहानी आजकल क्विक कॉमसे की भी चली हुई है।

एक व्यापक जन जागरण इन विदेशी कंपनियों के खिलाफ समय की जरूरत है। टैक्नोलोजी मनुष्य की सहायता के लिए होनी चाहिए, व्यापार, कुशलता बढ़ाने के लिए होनी चाहिए, न की उसे मारने के लिए। संतुलित टैक्नोलोजी ही श्रेष्ठ तरीका है।

ओला उबर की ड्राइवरों पर मार

टैक्नोलोजी का सहारा ले अमरीकी उबर, देसी ओला कंपनियां टैक्सी ड्राइवरों की सबसे बड़ी चुनौती है। इनका प्रयोग वे न करें तो ग्राहक ढूढ़ना मुश्किल, करें तो वे 33–34 प्रतिशत तक कमीशन ले लेती हैं, उन्हें कुछ बचता नहीं, रेगुलेशन और ड्राइवर–कंपनी समन्वय जरूरी है। इसलिए ये अमरीकन, यूरोपियन कंपनियां टैक्नोलोजी के हथियार से भारत का व्यापार और रोजगार लूटें नहीं, इसके लिए समाज में जन जागरण और सरकार का सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

भारत के पास है स्वदेशी ब्रह्मास्त्र

वैसे आर्थिक मोर्चे पर लड़ने का भारत को जितना लंबा अनुभव है, उतना शायद ही विश्व में किसी देश के पास रहा होगा। 1855–56 में जिस समय पर भारत पूरी तरह से अंग्रेजों के अधीन था, कोई भी उनके खिलाफ बोल नहीं सकता था। लड़ने की भी हमारे पास उस समय स्थिति नहीं थी। उस समय ही पंजाब में कूका रामसिंह जी जैसे क्रांतिकारियों ने ''अंग्रेजों की वस्तुओं का प्रयोग ना करो'' ऐसा अभियान चलाया। बाद में 1875 में स्वामी दयानंद ने स्वदेशी अभियान शुरू किया। स्वदेशी का आह्वान करते हुए विदेश की वस्तुओं का प्रयोग करने के स्थान पर भारत में ही बनी हुई चीजों का प्रयोग करने का प्रबल आह्वान उन्होंने किया। 1892 में बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने प्रसिद्ध उपन्यास आनंद मठ लिखा। इसके अंदर उन्होंने गीत लिखा– सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम शस्यश्यामलाम् मातरम् वंदे मातरम, वंदे मातरम, जो कि आगे चलकर प्रथम स्वदेशी आंदोलन का गीत और नारा ही बन गया।

प्रथम स्वदेशी आंदोलन

1905 में जब अंग्रेजों ने बंग भंग किया यानी बंगाल के दो टुकड़े किए, तो वहां की जनता खड़ी हो गई। रविंद्र नाथ टैगोर, विपिन चंद्र पाल, इधर वीर सावरकर, लाला लाजपत राय, इन सब लोगों ने अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार, विदेशी बहिष्कार, स्वदेशी स्वीकार का उद्घोष किया और यह प्रथम आर्थिक स्वतंत्रता का ऐसा महा अभियान था, जिसमें विश्व की सबसे बड़ी अंग्रेजों की सरकार को झुकना पड़ा और 1911 में बंग भंग को निरस्त करना पड़ा। स्वदेशी के अभियान से विश्व की सबसे बड़ी सरकार को भी झुकाया जा सकता है ऐसा भारत ने विश्व के सामने सबसे पहला सफल अभियान चला कर दिखाया। बाद में भी महात्मा तिलक, वीर सावरकर और महात्मा गांधी आदि ने अंग्रेजों के खिलाफ खादी के कपड़ा पहनना, विदेशी कपड़ों की होली जलाना और सब प्रकार की विदेशी वस्तुओं को बहिष्कार करते हुए स्वदेशी पर ही आग्रह करना इसके सफल प्रयत्न किये। जिसमें से भारत का स्वतंत्रता आंदोलन और स्वराज आंदोलन यह उभरा। यहां यह ध्यान रहे कि 1930 में लाहौर के कांग्रेस के अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता की मांग के प्रस्ताव के बाद ही कांग्रेस स्वतंत्रता के आंदोलन पर आई उससे पहले तो स्वदेशी का आंदोलन ही अंग्रेजों के विरुद्ध आंदोलन का काम कर

रहा था। अर्थात भारत की आज की स्वतंत्रता का मार्ग यह स्वदेशी आंदोलन में से ही निकला है। स्वतंत्रता के पश्चात भी जिस समय पर भारत साम्यवादी आर्थिक नीतियों के मकड़ जाल में जी रहा था तो उस समय पर भी पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कहा था कि भारत की अर्थव्यवस्था को अगर मजबूत बनाना है और मुझे दो ही शब्द बोलने हैं तो वे दो शब्द होंगे, स्वदेशी और विकेंद्रीकरण।

स्वावलंबन (उद्यमिता) से बचेगा रोजगार

भारत में रोजगार का क्षेत्र पहले से ही बड़ा चुनौती वाला है। उस पर अंग्रेजों की बनाई परिभाषा कि सरकारी नौकरी ही रोजगार है, ने भारत में बेरोजगारी को बढ़ाने का ही काम किया है। क्योंकि प्राईवट (पक्की नौकरी) व सरकारी नौकरियां मिलाकर भी 9–10 प्रतिशत से ऊपर होती ही नहीं। ऐसे में युवाओं को स्वरोजगार और उद्यमिता पर ही ध्यान केंद्रित करना होगा। स्टार्टअप, इनोवेशन के अलावा भारतीय देशी उद्यमिता जिसे जैविक उद्यमिता भी कहते है, को अपनाना होगा। सरल ढ़ंग से सुरक्षित व गुणवत्ता वाला रोजगार उद्यमिता के जैविक पथ से ही आता है। इसे भी भारतीय युवाओं को समझना जरूरी है। अतः इसी पुस्तक के अंत में दिया गया यह उद्घोष कि गांव–शहर की एक पुकार, उद्यमिता और स्वरोजगार, अत्यंत उपयोगी है। फिर साथ ही कहा है, 'हर घर स्वदेशी–हर युवा उद्यमी', इस मंत्र को जन–जन तक, हर युवा तक पहुंचाना है। यही है भारत के पूर्णरोजगार युक्त और समृद्धियुक्त भारत बनने का राजमार्ग।

स्वदेशी जागरण मंच का उदय

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा दिए गए स्वदेशी मंत्र को ही आगे बढ़ाते हुए भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ और बाद में स्वदेशी जागरण मंच के संस्थापक श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी ने उद्घोष किया, ''भारत को अमेरिका–चीन प्रणीत इस तीसरे विश्व युद्ध में विजयी होने का महामंत्र रहेगा – **स्वदेशी**''। और उन्होंने 1991 में स्वदेशी जागरण मंच का कार्य प्रारंभ कर दिया। जब विश्व व्यापार संघ में भारत को सदस्य बना दिया गया और भारत अमरीकी, यूरोपियन, चीनी कंपनियों का अखाड़ा देश बनने लगा, तो उस समय पर इसी स्वदेशी की भावना ने, इसी स्वदेशी के महामंत्र ने काफी मात्रा में देश को सुरक्षित निकाला।

स्वदेशी की लंबी लड़ाई

अनेक विषयों में चाहे एनरॉन संघर्ष का मामला हो जिसमें अमेरिका की बिजली कंपनी ने भारत के मुंबई के पास दामोल में पैर पसारे हों या फिर पशुधन संरक्षण यात्रा हुई हो। सागर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बड़े ट्रालों को रोकने का विषय हो या अमरीकी सिगरेट कंपनियों ने भारतीय बीड़ी व्यवसाय को ठप करने के प्रयत्न किए हों, सब में स्वदेशी आंदोलन सफलतापूर्वक भारतीयों को आगे बढ़ाता रहा है। ऐसे ही जीएम फसलों का विषय आया हो, ई–कॉमर्स की लंबी लड़ाई चली हो अथवा चीनी माल का भारत में जब प्रवेश तेजी से प्रारंभ हुआ उसके निषेध का विषय हो, स्वदेशी जागरण मंच ने सफलतापूर्वक स्वदेशी की लंबी लड़ाई में भारत की अगुवाई की है। स्वदेशी के महामंत्र से, स्वदेशी के ब्रह्मास्त्र से आर्थिक विषय पर विजय मिल सकती है ऐसा केवल भारत का ही अनुभव नहीं है, अनेक देशों में भी इस प्रकार के सफल अनुभव हुए हैं।

जापान में भी स्वदेशी भाव जागरण

एक उदाहरण जापान का हमेशा दिया जाता रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध में जब अमरीका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम गिराए, तो उसके बाद जापानी लोगों में अमरीकियों के खिलाफ बहुत क्रोध भड़क रहा था। किंतु 60 के दशक में जापान में संतरों की फसल लगातार खराब होती रही और जापानी लोग, जो संतरों के बहुत शौकीन हैं उन्हें इसकी आवश्यकता भी थी। ऐसे में अमरीका के कैलिफोर्निया प्रांत के बड़े मीठे और सस्ते संतरें वहां की कंपनियों ने जापान भेजने का प्रस्ताव रखा। यद्यपि वहां की सरकार ने पहले मना किया किंतु अमरीका के दबाव व ऑटोमोबाइल यानी कारों के आयात को रोकने की धमकी के बाद, जापान को संतरों के सरकारी आयात से प्रतिबंध को हटाना पड़ा। किंतु वहां की जनता ने यह तय कर लिया कि वह अमरीका के सस्ते और बड़े संतरों का प्रयोग नहीं करेंगे और वही हुआ। बहिष्कार सफल रहा। जापान के गांव से लेकर बड़े महाविद्यालय और बड़े महानगरों तक पूर्ण अमरीकी संतरों का बायकाट चला। अमरीकी संतरें खराब हो गए, सड़ गए, समुद्र में डुबो दिए गए। किंतु देशभक्त जापानियों ने, स्वदेशी प्रेमी जापानियों ने, वह नहीं खाए और अंततोगत्वा अमरीकन कंपनियां को मुंह की खानी पड़ी।

इंग्लैंड का भी उदाहरण

ऐसा ही प्रसंग इंग्लैंड में भी हुआ। जब वहां चार्ल्स प्रिंस की पहली पत्नी डायना ने जर्मनी की बड़ी कार खरीदने की घोषणा की तो इंग्लैंड की जनता ने विरोध किया और कहा कि आप महारानी हैं आप अगर जर्मनी की बनी हुई कारों का प्रयोग करेंगे तो देश की जनता में गलत संदेश जाएगा। इंग्लैंड की कारों का क्या होगा? इंग्लैंड के कार निर्माण सेक्टर मुसीबत में पड़ जाएंगे और अंततोगत्वा जागरूक जनता के दबाव को देखते हुए लेडी डायना को जर्मनी कार खरीदने का निर्णय वापस लेना पड़ा। कुछ ऐसे ही उदाहरण विश्व के अनेक देशों में से भी आते रहे हैं। इसराइल के द्वारा स्वयं निर्माण किए हुए हथियार और स्वाभिमान के साथ अरब देशों से लड़ने की कहानी तो सर्वविदित है ही, जो आज तक भी चल रही है यानी स्वदेशी।

देशभक्ति का अविष्कार है स्वदेशी

स्वदेशी यानि देश भक्ति का आविष्कार। यह किसी भी देश को आर्थिक रूप से धार देने वाला बड़ा हथियार प्रदान करता है और क्योंकि भारत का बाजार विश्व का सबसे बड़ा बाजार है एक बड़ा मिडिल वर्ग भारत में उभरा हुआ है भारत की खपत बहुत अधिक है पीपीपी परचेसिंग पावर पेरिटी में तो भारत, चीन के बाद दूसरे नंबर पर है। यद्यपि जीडीपी के मामले में अभी हम चौथे नंबर पर हैं, किंतु क्योंकि हमारे यहां जनता, युवा शक्ति यह पर्याप्त मात्रा में है इसलिए भारत के इस बाजार को यदि हम पूरी तरह से स्वदेशी, ''केवल स्वदेशी पूर्ण स्वदेशी'' के उद्घोष के साथ परिपूर्ण करें, ''स्वदेशी स्वीकार–विदेशी का पूर्ण बहिष्कार'' इस नारे को जन–जन तक पहुंचाने के अभियान में जुट जाएं, तो विश्व की कोई भी ताकत भारत को इस विश्व व्यापार युद्ध में या आर्थिक युद्ध में हरा नहीं सकती। द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका के पास सबसे बड़ा हथियार था एटॉमिक बम। यूक्रेन के पास रस से लड़ने का बड़ा हथियार रहे ड्रोन। भारत को इस विश्व व्यापार युद्ध में विजयी होना है तो भारत के पास सबसे बड़ा ब्रह्मास्त्र है स्वदेशी और स्वावलंबन। इसलिए भारत के युवाओं को स्वदेशी का पूर्ण प्रयोग और रोजगार का मार्ग उद्यमिता, इस दोपहिया वाहन पर चलना होगा। ''गांव शहर की एक पुकार, उद्यमिता और स्वरोजगार'', ''हर घर स्वदेशी–हर युवा उद्यमी'' के जैसे नारों को, विचारों को, जब हम जन–जन तक पहुंचाएंगे, भारत का प्रत्येक व्यक्ति इसका

संकल्प करेगा, महिला बच्चे इसका संकल्प करेंगे, दुकानदार संकल्प करेंगे, फैक्ट्रियां चलाने वाले संकल्प करेंगे, मजदूर किसान व्यापारी राजनेता या कर्मचारी सभी संकल्प करेंगे और ये उद्‌घोष जैसे ही सारे देश पर सिर चढ़कर बोलेगें, वैसे ही भारत सारे विश्व में सिर चढ़कर बोलेगा। तब चीन हो, अमेरिका हो या फिर अन्य कोई वैश्विक सामरिक आर्थिक ताकत, भारत के बाजार को, रोजगार को लूट नहीं पाएंगे और इस विश्व युद्ध में भारत विजयी होकर रहेगा। क्योंकि भारत का विजयी होना यह उसकी नियति ही है और इसी के लिए स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान भारत में प्रारंभ हुआ है। हम उस मार्ग पर आगे बढ़ते जाना है।

विषय पूर्ण करने से पहले स्वदेशी अभियान का एक पक्ष और भी है कि स्वदेशी अभियान केवल भारतीय वस्तुओं के, स्थानीय वस्तुओं के क्रय–विक्रय का ही विषय नहीं है, बल्कि यह बड़ा व्यापक है। हमारी वेशभूषा, हमारी बोली–भाषा, हमारा रहन–सहन, इसमें भी भारतीयता की झलक हो या फिर हम (अनजाने में) अंग्रेजी सभ्यता के शिकार हो रहे हैं?

जन्मदिन भारतीय पद्धति से मनाना (मोमबत्ती बुझाकर नहीं, दिये जलाकर), हस्ताक्षर अपनी मातृभाषा में करना, विवाह या अन्य मंगल–प्रसंग में छपने वले कार्ड अंग्रेजी में न होकर अपनी भाषा में होना, छुट्टियां होने पर तुर्किए, मालदीव जैसे भारत को दुश्मन समझने वाले देशों की बजाए अपने देश में ही या मित्र देश में जाना भी स्वदेशी अपनाना है।

स्वदेशी, यह देशभक्ति का अविष्कार है। स्वदेशी अपनाना अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र में भारतीयता की गूंज सुनाई दें। मोबाइल, लैपटॉप की स्क्रीन से लेकर विवाह जैसे मंगल प्रसंगों पर सब जगह यह भाव झलकना चाहिए, इसी में स्वाभिमान दिखना चाहिए। अंग्रेजियत के बोझ से दबे हुए व्यक्ति कभी सीना तानकर भारत माता की जय भी नहीं बोल पाते। अतः स्वदेशी के समग्र दृष्टिकोण को अपनाना ही इस अभियान की पूर्ण सफल परिणीति होगी।

❑❑❑

स्वदेशी उद्‌घोष

1. जय स्वदेशी, जय जय स्वदेशी ।

2. जब बाजार जायेंगे, सामान स्वदेशी लाएंगे।

3. विदेशी वस्तुएं छोड़कर, बोलो वंदेमातरम।

4. स्वदेशी का यह संदेश... अपनी भाषा, अपना वेश ।

5. स्थानीय को बढ़ायेंगें – तभी स्वदेशी कहलाएंगे ।

6. जन्मदिन हो, या हो शादी – भारतीय दृष्टि के हम आदि ।

7. स्वरोजगार अपनाएंगे, देश समृद्ध बनाएंगे ।

8. गांव शहर की एक पुकार उद्यमिता और स्वरोजगार ।

9. कृषि कौशल उद्यमिता अपनाओ, देश को गरीबीमुक्त बनाओ ।

10. स्वदेशी अपनाएगें – देश को आगे बढ़ाएंगे।

(स्थानीय भाषा और पद्धति से नये उद्‌घोष भी बनाए जा सकते हैं)

स्वदेशी गीत

बने राष्ट्र का धर्म स्वदेशी

बने राष्ट्र का धर्म स्वदेशी, वैभव मंत्र स्वदेशी।
स्वतंत्रता का प्राण स्वदेशी, हो युग धर्म स्वदेशी।।

भारत की वत्सल गोदी में, पोषित राष्ट्र हमारा ।
मातृभूमि के रस से सिंचित, तन, मन, जीवन सारा।
भारत माता गौरव के हित, लें संकल्प स्वदेशी ।।
हो युग धर्म स्वदेशी...

भूल गए क्या धर्म है अपना, विस्मृत चिंतन धारा।
शक्ति पुंज यह देश हमारा, अपमानित क्यों हारा।
दुःख दास्य को दूर हटाने, संबल श्रेष्ठ स्वदेशी ।।
हो युग धर्म स्वदेशी...

ग्राम नगर क्या घर–घर में हो, जय जय स्वदेशी नारा।
दसों दिशा हो सुख–शांति, लेकर यही सहारा।
शोषित दुनिया मुक्त बनें, गूंजे गान स्वदेशी ।।
हो युग धर्म स्वदेशी...

बने राष्ट्र का धर्म स्वदेशी, वैभव मंत्र स्वदेशी।
स्वतंत्रता का प्राण स्वदेशी, हो युग धर्म स्वदेशी।।